



# Mamta kumari

01 Apr 1996

02:05 PM

Bihar Sharif

Model: Web-MyKundli

Order No: 121112901

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग \_\_\_\_\_: पुल्लिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 01/04/1996  
दिन \_\_\_\_\_: सोमवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 14:05:00 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 21:02:06 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Bihar Sharif  
राज्य \_\_\_\_\_: Bihar  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 25:07:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 85:25:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: 00:11:40 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 14:16:40 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: -00:03:50 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 02:56:36 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 05:40:09 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 18:04:37 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 12:24:27 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: उत्तरायण  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: उत्तर  
ऋतु \_\_\_\_\_: वसन्त  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 18:05:47 मीन  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 25:11:57 कर्क

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: कर्क - चन्द्र  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: सिंह - सूर्य  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: पू०फाल्गुनी - 2  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: शुक्र  
योग \_\_\_\_\_: गण्ड  
करण \_\_\_\_\_: कौलव  
गण \_\_\_\_\_: मनुष्य  
योनि \_\_\_\_\_: मूषक  
नाड़ी \_\_\_\_\_: मध्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: क्षत्रिय  
वश्य \_\_\_\_\_: वनचर  
वर्ग \_\_\_\_\_: श्वान  
युँजा \_\_\_\_\_: मध्य  
हंसक \_\_\_\_\_: अग्नि  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: टा-टाटा  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: रजत - रजत  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: मेष

## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1918	चैत्र	12
पंजाबी	संवत : 2052	चैत्र	19
बंगाली	सन् : 1402	चैत्र	18
तमिल	संवत : 2052	पंगुनी	19
केरल	कोल्लम : 1171	मीनम	19
नेपाली	संवत : 2052	चैत्र	19
चैत्रादि	संवत : 2053	चैत्र	शुक्ल 13
कार्तिकादि	संवत : 2053	चैत्र	शुक्ल 13

### पंचांग

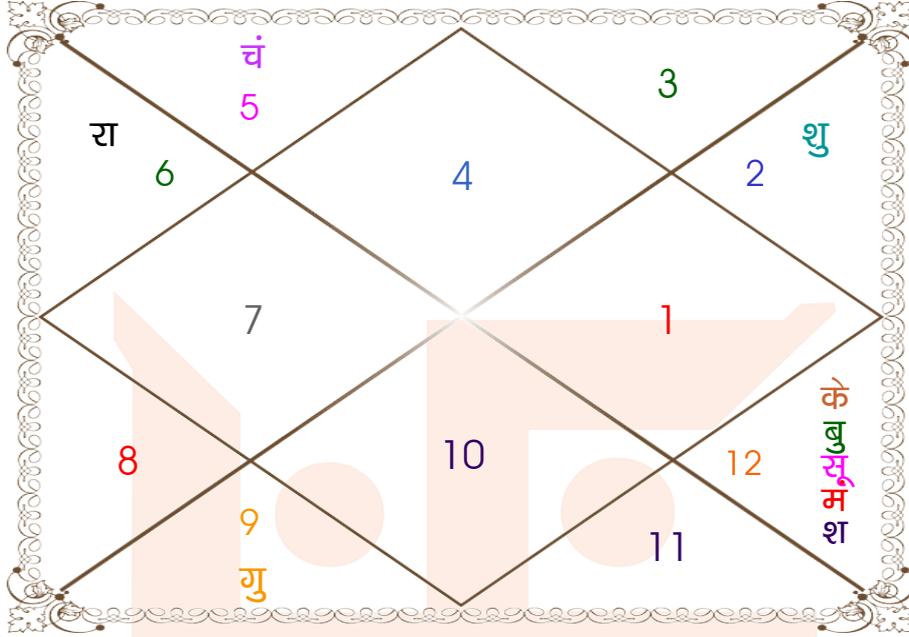
सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 13  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 29:24:07  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 13  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : मघा  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 07:36:11 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : पू०फाल्गुनी  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : गण्ड  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 29:11:39 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : गण्ड  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : कौलव  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 16:59:42 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : कौलव  
भयात \_\_\_\_\_ : 16:12:03  
भभोग \_\_\_\_\_ : 63:40:53  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : शुक्र 14 वर्ष 11 मा 13 दि

### घात चक्र

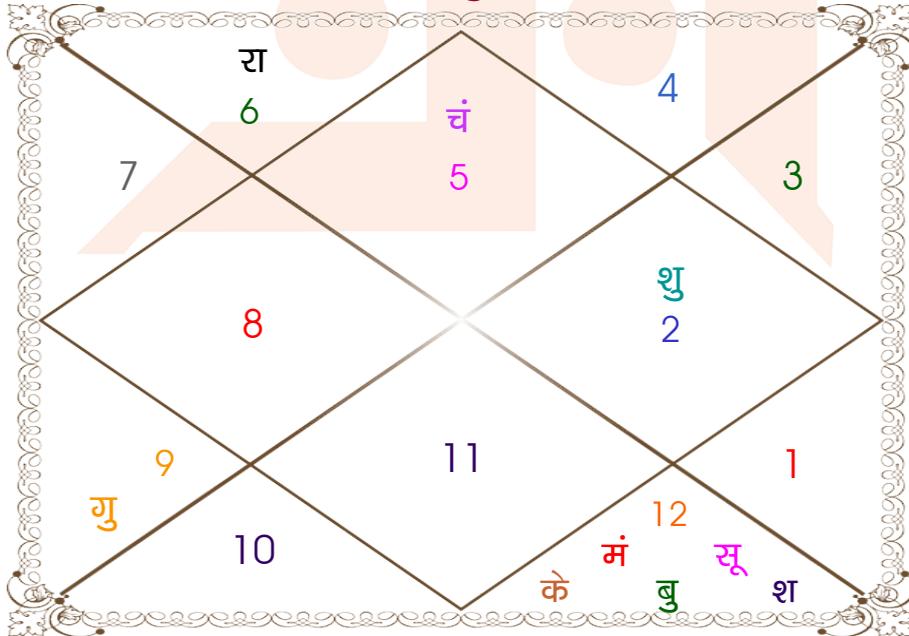
मास \_\_\_\_\_ : ज्येष्ठ  
तिथि \_\_\_\_\_ : 3-8-13  
दिन \_\_\_\_\_ : शनिवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : मूल  
योग \_\_\_\_\_ : धृति  
करण \_\_\_\_\_ : बव  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 1  
वर्ग \_\_\_\_\_ : मेष  
लग्न \_\_\_\_\_ : मीन  
सूर्य \_\_\_\_\_ : धनु  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : मकर  
मंगल \_\_\_\_\_ : मकर  
बुध \_\_\_\_\_ : तुला  
गुरु \_\_\_\_\_ : कुम्भ  
शुक्र \_\_\_\_\_ : मीन  
शनि \_\_\_\_\_ : वृश्चिक  
राहु \_\_\_\_\_ : मेष

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



## लग्न कुण्डली और दशा

### लग्न कुंडली

के	सू	मं	शु
श			
			ल
			चं
गु			रा

### लग्न कुंडली

शु		के	सू	मं	श
	ल				
	चं				
रा					गु

विंशोत्तरी  
शुक्र 14वर्ष 11मा 13दि  
शुक्र

01/04/1996

17/03/2111

शुक्र	16/03/2011
सूर्य	15/03/2017
चन्द्र	16/03/2027
मंगल	15/03/2034
राहु	15/03/2052
गुरु	15/03/2068
शनि	16/03/2087
बुध	16/03/2104
केतु	17/03/2111

योगिनी

उल्का 4वर्ष 5मा 25दि  
भद्रिका

26/09/2025

26/09/2030

भद्रिका	06/06/2026
उल्का	07/04/2027
सिद्धा	27/03/2028
संकटा	07/05/2029
मंगला	26/06/2029
पिंगला	06/10/2029
धान्या	07/03/2030
भ्रामरी	26/09/2030

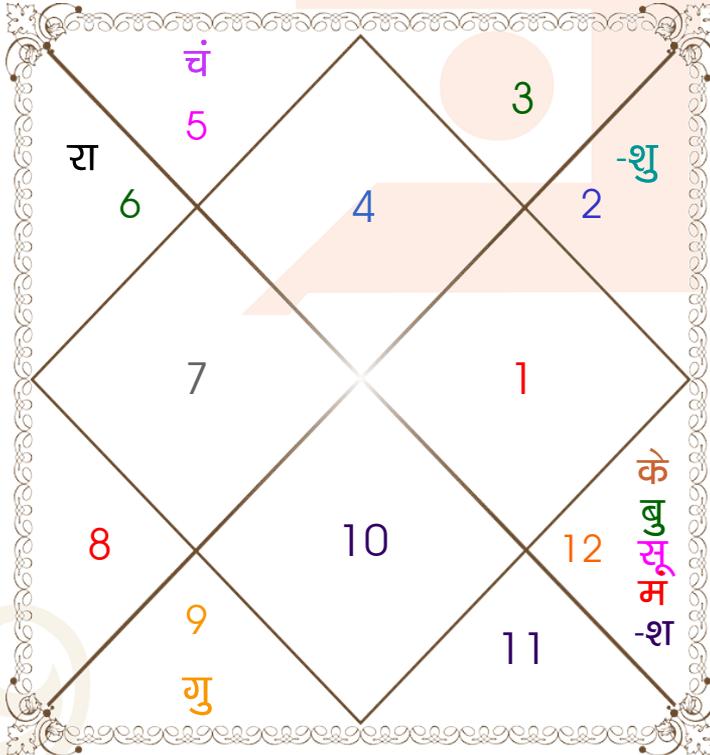
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कर्क	25:11:57	316:05:32	आश्लेषा	3	9	चंद्र	बुध	राहु	---
सूर्य			मीन	18:05:47	00:59:11	रेवती	1	27	गुरु	बुध	बुध	मित्र राशि
चंद्र			सिंह	16:41:54	12:29:43	पूर्वाषाढा	2	11	सूर्य	शुक्र	चंद्र	मित्र राशि
मंगल	अ		मीन	12:11:47	00:46:29	उ०भाद्रपद	3	26	गुरु	शनि	मंगल	मित्र राशि
बुध	अ		मीन	22:21:57	02:03:39	रेवती	2	27	गुरु	बुध	चंद्र	नीच राशि
गुरु			धनु	22:09:54	00:05:53	पूर्वाषाढा	3	20	गुरु	शुक्र	शनि	स्वराशि
शुक्र			वृष	03:58:28	00:58:49	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	शनि	स्वराशि
शनि	अ		मीन	05:27:55	00:07:20	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	बुध	सम राशि
राहु	व		कन्या	23:20:35	00:00:29	चित्रा	1	14	बुध	मंगल	मंगल	मूलत्रिकोण
केतु	व		मीन	23:20:35	00:00:29	रेवती	3	27	गुरु	बुध	मंगल	मूलत्रिकोण
हर्ष			मक	10:12:08	00:01:49	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	चंद्र	---
नेप			मक	03:43:50	00:00:55	उत्तराषाढा	3	21	शनि	सूर्य	शनि	---
प्लूटो	व		वृश्चि	09:06:49	00:00:52	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	शुक्र	---
दशम भाव			मेष	22:48:42	--	भरणी	--	2	मंगल	शुक्र	शनि	--

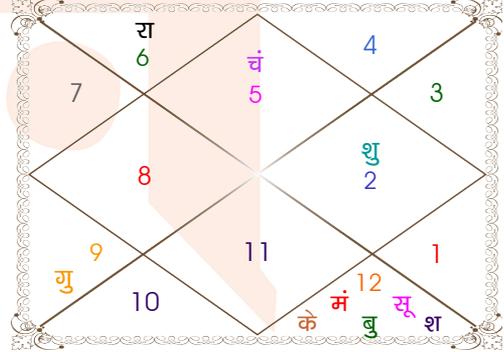
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:48:22

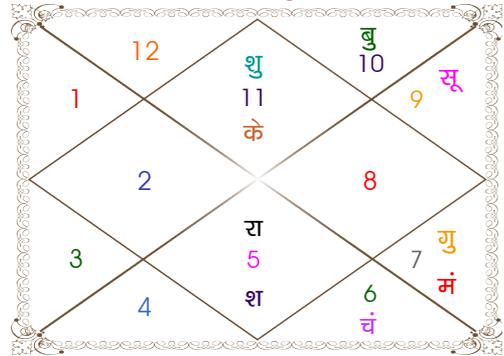
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कर्क 09:48:05	कर्क 25:11:57
2	सिंह 09:48:05	सिंह 24:24:12
3	कन्या 09:00:20	कन्या 23:36:27
4	तुला 08:12:35	तुला 22:48:42
5	वृश्चिक 08:12:35	वृश्चिक 23:36:27
6	धनु 09:00:20	धनु 24:24:12
7	मकर 09:48:05	मकर 25:11:57
8	कुम्भ 09:48:05	कुम्भ 24:24:12
9	मीन 09:00:20	मीन 23:36:27
10	मेष 08:12:35	मेष 22:48:42
11	वृष 08:12:35	वृष 23:36:27
12	मिथुन 09:00:20	मिथुन 24:24:12

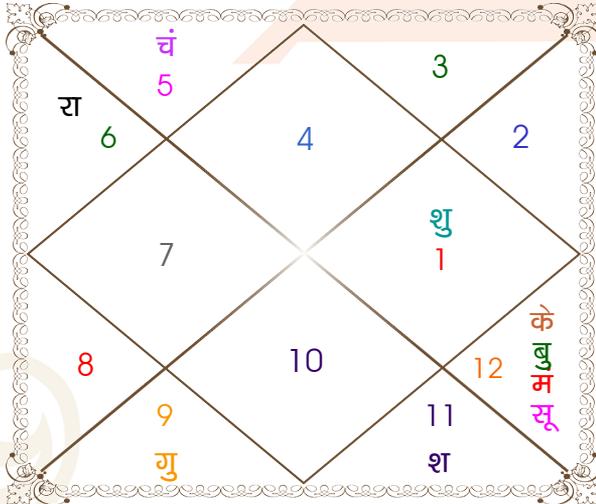
### निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कर्क	25:11:57
2	सिंह	21:01:10
3	कन्या	20:35:57
4	तुला	22:48:42
5	वृश्चिक	25:08:02
6	धनु	25:59:29
7	मकर	25:11:57
8	कुम्भ	21:01:10
9	मीन	20:35:57
10	मेष	22:48:42
11	वृष	25:08:02
12	मिथुन	25:59:29

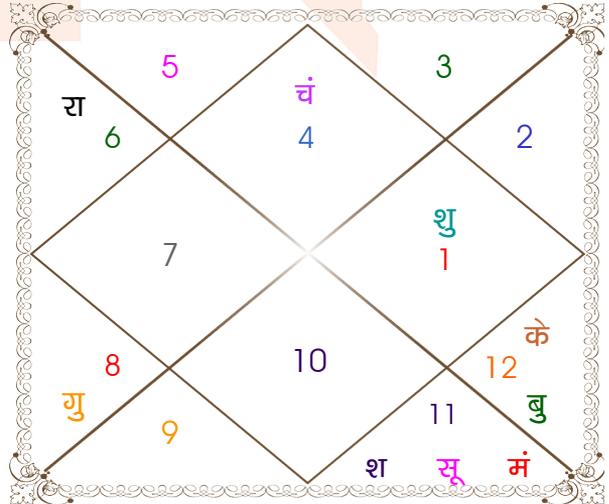
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली



## विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 14 वर्ष 11 मास 13 दिन

शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष
01/04/1996	16/03/2011	15/03/2017	16/03/2027	15/03/2034
16/03/2011	15/03/2017	16/03/2027	15/03/2034	15/03/2052
00/00/0000	सूर्य 03/07/2011	चंद्र 13/01/2018	मंगल 12/08/2027	राहु 25/11/2036
01/04/1996	चंद्र 02/01/2012	मंगल 14/08/2018	राहु 29/08/2028	गुरु 21/04/2039
चंद्र 15/03/1997	मंगल 09/05/2012	राहु 13/02/2020	गुरु 05/08/2029	शनि 25/02/2042
मंगल 15/05/1998	राहु 02/04/2013	गुरु 14/06/2021	शनि 14/09/2030	बुध 13/09/2044
राहु 15/05/2001	गुरु 20/01/2014	शनि 14/01/2023	बुध 11/09/2031	केतु 02/10/2045
गुरु 14/01/2004	शनि 01/01/2015	बुध 14/06/2024	केतु 07/02/2032	शुक्र 02/10/2048
शनि 16/03/2007	बुध 08/11/2015	केतु 13/01/2025	शुक्र 08/04/2033	सूर्य 26/08/2049
बुध 13/01/2010	केतु 15/03/2016	शुक्र 14/09/2026	सूर्य 14/08/2033	चंद्र 25/02/2051
केतु 16/03/2011	शुक्र 15/03/2017	सूर्य 16/03/2027	चंद्र 15/03/2034	मंगल 15/03/2052

गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष
15/03/2052	15/03/2068	16/03/2087	16/03/2104	17/03/2111
15/03/2068	16/03/2087	16/03/2104	17/03/2111	00/00/0000
गुरु 03/05/2054	शनि 19/03/2071	बुध 11/08/2089	केतु 12/08/2104	शुक्र 16/07/2114
शनि 13/11/2056	बुध 26/11/2073	केतु 08/08/2090	शुक्र 12/10/2105	सूर्य 16/07/2115
बुध 19/02/2059	केतु 05/01/2075	शुक्र 08/06/2093	सूर्य 17/02/2106	चंद्र 02/04/2116
केतु 26/01/2060	शुक्र 06/03/2078	सूर्य 15/04/2094	चंद्र 18/09/2106	00/00/0000
शुक्र 26/09/2062	सूर्य 16/02/2079	चंद्र 14/09/2095	मंगल 14/02/2107	00/00/0000
सूर्य 15/07/2063	चंद्र 16/09/2080	मंगल 10/09/2096	राहु 04/03/2108	00/00/0000
चंद्र 13/11/2064	मंगल 26/10/2081	राहु 31/03/2099	गुरु 08/02/2109	00/00/0000
मंगल 20/10/2065	राहु 01/09/2084	गुरु 07/07/2101	शनि 19/03/2110	00/00/0000
राहु 15/03/2068	गुरु 16/03/2087	शनि 16/03/2104	बुध 17/03/2111	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शुक्र 14 वर्ष 10 मा 28 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

<b>चंद्र - शुक्र</b> 13/01/2025 14/09/2026	<b>चंद्र - सूर्य</b> 14/09/2026 16/03/2027	<b>मंगल - मंगल</b> 16/03/2027 12/08/2027	<b>मंगल - राहु</b> 12/08/2027 29/08/2028	<b>मंगल - गुरु</b> 29/08/2028 05/08/2029
शुक्र 25/04/2025 सूर्य 25/05/2025 चंद्र 15/07/2025 मंगल 19/08/2025 राहु 19/11/2025 गुरु 08/02/2026 शनि 15/05/2026 बुध 09/08/2026 केतु 14/09/2026	सूर्य 23/09/2026 चंद्र 08/10/2026 मंगल 19/10/2026 राहु 15/11/2026 गुरु 10/12/2026 शनि 08/01/2027 बुध 02/02/2027 केतु 13/02/2027 शुक्र 16/03/2027	मंगल 24/03/2027 राहु 16/04/2027 गुरु 06/05/2027 शनि 29/05/2027 बुध 19/06/2027 केतु 28/06/2027 शुक्र 23/07/2027 सूर्य 30/07/2027 चंद्र 12/08/2027	राहु 08/10/2027 गुरु 28/11/2027 शनि 28/01/2028 बुध 22/03/2028 केतु 14/04/2028 शुक्र 17/06/2028 सूर्य 06/07/2028 चंद्र 07/08/2028 मंगल 29/08/2028	गुरु 14/10/2028 शनि 07/12/2028 बुध 24/01/2029 केतु 13/02/2029 शुक्र 11/04/2029 सूर्य 28/04/2029 चंद्र 26/05/2029 मंगल 15/06/2029 राहु 05/08/2029
<b>मंगल - शनि</b> 05/08/2029 14/09/2030	<b>मंगल - बुध</b> 14/09/2030 11/09/2031	<b>मंगल - केतु</b> 11/09/2031 07/02/2032	<b>मंगल - शुक्र</b> 07/02/2032 08/04/2033	<b>मंगल - सूर्य</b> 08/04/2033 14/08/2033
शनि 08/10/2029 बुध 05/12/2029 केतु 28/12/2029 शुक्र 06/03/2030 सूर्य 26/03/2030 चंद्र 29/04/2030 मंगल 22/05/2030 राहु 22/07/2030 गुरु 14/09/2030	बुध 04/11/2030 केतु 25/11/2030 शुक्र 25/01/2031 सूर्य 12/02/2031 चंद्र 14/03/2031 मंगल 04/04/2031 राहु 28/05/2031 गुरु 16/07/2031 शनि 11/09/2031	केतु 20/09/2031 शुक्र 15/10/2031 सूर्य 22/10/2031 चंद्र 04/11/2031 मंगल 12/11/2031 राहु 05/12/2031 गुरु 25/12/2031 शनि 17/01/2032 बुध 07/02/2032	शुक्र 18/04/2032 सूर्य 10/05/2032 चंद्र 14/06/2032 मंगल 09/07/2032 राहु 11/09/2032 गुरु 07/11/2032 शनि 13/01/2033 बुध 15/03/2033 केतु 08/04/2033	सूर्य 15/04/2033 चंद्र 25/04/2033 मंगल 03/05/2033 राहु 22/05/2033 गुरु 08/06/2033 शनि 28/06/2033 बुध 16/07/2033 केतु 24/07/2033 शुक्र 14/08/2033
<b>मंगल - चंद्र</b> 14/08/2033 15/03/2034	<b>राहु - राहु</b> 15/03/2034 25/11/2036	<b>राहु - गुरु</b> 25/11/2036 21/04/2039	<b>राहु - शनि</b> 21/04/2039 25/02/2042	<b>राहु - बुध</b> 25/02/2042 13/09/2044
चंद्र 01/09/2033 मंगल 13/09/2033 राहु 15/10/2033 गुरु 13/11/2033 शनि 17/12/2033 बुध 16/01/2034 केतु 28/01/2034 शुक्र 05/03/2034 सूर्य 15/03/2034	राहु 10/08/2034 गुरु 20/12/2034 शनि 25/05/2035 बुध 12/10/2035 केतु 08/12/2035 शुक्र 20/05/2036 सूर्य 09/07/2036 चंद्र 29/09/2036 मंगल 25/11/2036	गुरु 22/03/2037 शनि 08/08/2037 बुध 10/12/2037 केतु 30/01/2038 शुक्र 26/06/2038 सूर्य 08/08/2038 चंद्र 20/10/2038 मंगल 11/12/2038 राहु 21/04/2039	शनि 03/10/2039 बुध 27/02/2040 केतु 28/04/2040 शुक्र 19/10/2040 सूर्य 10/12/2040 चंद्र 06/03/2041 मंगल 06/05/2041 राहु 09/10/2041 गुरु 25/02/2042	बुध 07/07/2042 केतु 30/08/2042 शुक्र 02/02/2043 सूर्य 20/03/2043 चंद्र 06/06/2043 मंगल 30/07/2043 राहु 17/12/2043 गुरु 19/04/2044 शनि 13/09/2044

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

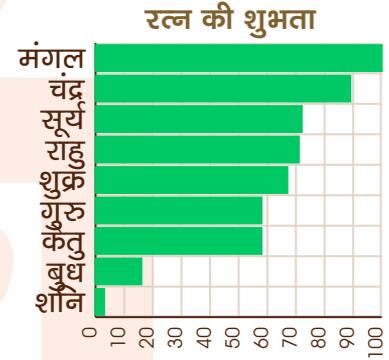
मूलांक	1
भाग्यांक	3
मित्र अंक	1, 4, 8, 9, 3
शत्रु अंक	5, 6
शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
शुभ दिन	मंगल, सोम, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, चन्द्र, गुरु
मित्र राशि	वृश्चिक, मेष
मित्र लग्न	तुला, मीन, वृष
अनुकूल देवता	सूर्य
शुभ रत्न	मोती
शुभ उपरत्न	चन्द्रमणि
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	श्वेत
शुभ दिशा	पश्चिमोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	शंख, कपूर, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दही

## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	100%	भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
मोती	चंद्र	89%	धन, स्वास्थ्य
माणिक्य	सूर्य	72%	भाग्योदय, धन
गोमेद	राहु	71%	पराक्रम, भाग्योदय
हीरा	शुक्र	67%	धनार्जन, सुख
पुखराज	गुरु	58%	शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
लहसुनिया	केतु	58%	भाग्योदय, शत्रु व रोग मुक्ति
पन्ना	बुध	16%	नेष्ट भाग्य, व्यय, पराक्रम हानि
नीलम	शनि	3%	नेष्ट भाग्य, दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना



### दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	16/03/2011	59%	77%	100%	28%	58%	79%	16%	77%	64%
सूर्य	15/03/2017	84%	95%	100%	16%	64%	54%	0%	58%	41%
चंद्र	16/03/2027	78%	100%	100%	28%	58%	67%	3%	58%	41%
मंगल	15/03/2034	78%	95%	100%	0%	64%	67%	3%	58%	64%
राहु	15/03/2052	59%	77%	97%	16%	58%	73%	16%	83%	41%
गुरु	15/03/2068	78%	95%	100%	0%	70%	54%	3%	71%	58%
शनि	16/03/2087	59%	77%	97%	28%	58%	73%	28%	77%	41%
बुध	16/03/2104	78%	77%	100%	41%	58%	73%	3%	71%	58%
केतु	17/03/2111	59%	77%	100%	16%	58%	73%	0%	58%	71%

## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	01/04/1996-17/04/1998	-----	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	-----

### द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	-----

### तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076

### शनि का ढैया फल

#### ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

#### फल

शुभ
अशुभ
अशुभ
शुभ
सम

#### क्षेत्र

भाग्योदय
बुरा स्वास्थ्य
धन
पराक्रम
सन्तति कष्ट

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपके जन्म समय में मंगल चन्द्रकुंडली में अष्टम भाव में स्थित है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष है। आपकी चन्द्रकुंडली में शास्त्रानुसार मंगली दोष भंग हो जाता है। अतः आपको इसके अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे। इससे आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बिना किसी विघ्न बाधा के यथोचित समय पर सिद्ध होते रहेंगे। विवाहोपरांत यदा कदा मध्यम रूप से पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है लेकिन इससे कोई हानि नहीं होगी। इसके शुभ प्रभाव से आप उत्तम शिक्षा प्राप्त करेंगे तथा भाई बहनों से भी जीवन में पूर्ण सुख तथा सहयोग अर्जित करेंगे। इस प्रकार आपका सम्पूर्ण जीवन सुख सौभाग्य एवं ऐश्वर्य से सुसम्पन्न रहेगा।

यद्यपि यह मंगल आपके लिए सामान्यतया शुभ रहेगा परन्तु इसके प्रभाव से आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब अवश्य होगा लेकिन विवाह कार्य अत्यंत ही शांत एवं सुखद वातावरण में सम्पन्न होगा। इसमें आपको किसी भी प्रकार से व्यवधान या समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। विवाह के पश्चात आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा। परन्तु यदा कदा पत्नी के स्वास्थ्य में दुर्बलता आ सकती है। लेकिन आपके अन्य सभी महत्वपूर्ण कार्य बिना किसी व्यवधान के सम्पन्न होंगे फलतः दाम्पत्य जीवन में प्रसन्नता बनी रहेगी।

आपकी चन्द्रकुंडली में मंगल अष्टम भाव में स्थित है। अतः आपके सभी व्यापारिक सांसारिक सामाजिक तथा पारिवारिक कार्य बिना किसी आवश्यक विघ्न बाधाओं तथा समस्याओं के सम्पन्न होते रहेंगे परन्तु यदा कदा पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि से आपके लाभ मार्ग हमेशा प्रशस्त रहेंगे। जीवन में आर्थिक स्थिति हमेशा सुदृढ़ रहेगी जिससे धन वैभव का कभी भी अभाव नहीं रहेगा। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि होने से आप बिना किसी विघ्न बाधा के अपनी शिक्षा पूर्ण करेंगे। साथ ही आप पारिवारिक सुख को भी

प्राप्त करेंगे एवं परिवार में हमेशा सुख शान्ति बनी रहेगी। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा जीवन में भाई बहनों के सुख तथा सहयोग को प्राप्त करने में भी आप एक भाग्यशाली पुरुष होंगे। अतः मंगल के इस शुभ प्रभाव से आप सामान्यतया शान्ति एवं आनंद पूर्वक जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखमय एवं आनंदमय बनाने के लिए आपको किसी ऐसी गैरमांगलिक या मांगलिक कन्या से शादी करनी चाहिए जिसकी कुंडली में नियमानुसार मांगलिक योग भंग हो रहा हो। इस प्रकार से यदि आप विवाह करेंगे तो आपका दाम्पत्य जीवन अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा तथा सर्वत्र शुभ प्रभावों में भी वृद्धि होगी जिसके द्वारा आप सभी प्रकार से जीवन में सुख संसाधन धनऐश्वर्य एवं प्रतिष्ठा को प्राप्त करने में सफल रहेंगे। समाज में एक प्रतिष्ठित तथा यशस्वी पुरुष के रूप में सम्माननीय समझे जाएंगे।

इसके अतिरिक्त जन्मपत्री मिलान के समय यदि कन्या की कुंडली में अष्टम भाव में ही मंगल हो तो यत्न पूर्वक ऐसे विवाह की उपेक्षा करनी चाहिए क्योंकि समान भावों में मंगल के रहने से आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान आएंगे तथा इसका दुष्प्रभाव आप दोनों के स्वास्थ्य पर भी पड़ सकता है जिससे दाम्पत्य सुखोपभोग में आप परेशानी की अनुभूति करेंगे। अन्य भावों में स्थित मंगल प्रायः शुभ फल ही प्रदान करेगा अतः सावधानी पूर्वक एवं सोच विचार कर अन्तिम निर्णय लेना चाहिए जिससे जीवन में अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हो। साथ ही दाम्पत्य जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत हो सके।

## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

### काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में वासुकि नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए कभी दुःखमय हो जाता है। पारिवारिक सदस्यों से किसी समय थोड़ा मनमुटाव हो जाता है। भाई-बहनों से आंशिक रूप में दुःख उठाना पड़ता है। रिश्तेदार थोड़ा बहुत नुकसान पहुँचाते रहते हैं और मित्रगण से भी किसी समय जातक थोड़ी क्षति पाता है। घर में सुख शान्ति का आंशिक अभाव रहता है।

पूजा, पाठ, हवन, दान आदि धर्म कार्य में जातक को विशेष रुचि नहीं रहती है। भाग्योदय होने में आंशिक रूप से बाधाएँ आती हैं तथा नौकरी एवं व्यवसाय के क्षेत्र में किंचित संघर्ष करना पड़ता है और राजकीय सेवा के अवसर भी प्राप्त होते हैं तथा पराक्रम, यश, पद व प्रतिष्ठा के लिए आंशिक संघर्ष करना पड़ता है। जातक विदेश गमन करता है जिसमें थोड़ा बहुत कष्ट झेलना पड़ता है।

इस योग के कारण जातक को शारीरिक रोग-व्याधि समय-समय पर घेर लेती है। जिसमें सामान्य से विशेष खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति नाजुक हो जाती है। कालान्तर में आर्थिक स्थिति सामान्य हो जाती है।

इस योग के कारण जातक कानूनी दस्तावेजों पर भावुकतावश हस्ताक्षर करके आंशिक रूप में नुकसान पाता है और राज्य पक्ष से भी जातक को अल्पमात्रा में प्रतिकूल फल प्राप्त होता है और नौकरी व्यवसाय में निलम्बित होने का भय बना रहता है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक अपने जीवन में बहुत सफलता प्राप्त करता है। विलम्ब से उत्तम भाग्य का निर्माण भी होता है और उन्नति के कई अवसर प्राप्त होते हैं।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. 'ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अद्वारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।

8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

#### विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।

# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

- सूर्य नवम् भाव में स्थित है तथा उस पर शनि और राहु का प्रभाव है।
- नवम् भाव में केतु एवं शनि स्थित हैं
- पंचम् भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में सूर्य, मंगल, गुरु, शनि और केतु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुण्डली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये

पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में केतु पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ काले कुत्ते को मीठी रोटी खिलाएं। रंगबिरंगी चिड़ियों को दाना डालें। नारियल का दान करें या जल प्रवाह करें। ब्राह्मणों की सेवा कर आशीर्वाद प्राप्त करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

#### नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

## ग्रह फल

### सूर्य

नवमभाव में सूर्य होतो जातक साहसी, ज्योतिषी, नेता सदाचारी, तपस्वीयोगी, वाहनसुख, भृत्यसुख एवं पिता के लिए अशुभ होता है।

मीन राशि में रवि हो तो जातक बुद्धिमान्, यशस्वी, व्यापारी, विवेकी ज्ञानी, योगी, प्रेमी, गुप्त विद्याओं में रुचि रखने वाला और स्वसुर से लाभन्वित होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आप पिता के स्नेह पात्र होंगे। उनका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। जीवन में धन सम्पत्ति से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आपके भाग्योदय संबंधी कार्यों में भी उनकी आपके लिए पूर्ण प्रेरणा तथा सहयोग का भाव रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगे एवं उनकी आज्ञा पालन तथा सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद उत्पन्न होने के कारण इनमें अल्प मात्रा में तनाव या कटुता का समावेश का आभास होगा जो कुछ समयोपरान्त स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी हार्दिक सहायता करेंगे एवं सुख दुःख में उनको पूर्ण वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

### चन्द्र

द्वितीयभाव में चन्द्रमा हो तो जातक परदेशवासी, भोगी, सुन्दर मधुरभाषी, भाग्यवान्, सहनशील एवं शान्तिप्रिय होता है।

सिंह राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दृढ़देही, दाँत तथा पेट का रोगी, मातृभक्त, अल्पसन्ततिवान्, गम्भीर, दानी, साहसी, शान दिखाने वाला अभिमानी, महत्वाकांक्षी एवं पुराने विचारों वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं कोई विशेष शारीरिक रुग्णता नहीं रहेगी। वे आपको हमेशा धनार्जन एवं विद्याध्ययन संबंधी कार्यों में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आपकी पारिवारिक उन्नति एवं पालन करने में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी यदा कदा वे आपको नैतिक शिक्षा भी देंगी तथा आपके प्रति उनके हृदय में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। इसके साथ ही जीवन में कई महत्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि आप उनके सहयोग से ही करेंगे।

आप की भी माता के प्रति हादिक श्रद्धा रहेगी एवं उनकी आज्ञा पालन करने में आप गौरव की अनुभूति करेंगे। साथ ही जीवन में सर्वप्रकार से उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करते रहेंगे। अतः आपकी

परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं जीवन में एक दूसरों की सहायता एवं सहयोग का आदान प्रदान करके सुखानुभूति करेंगे।

### मंगल

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, क्रोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

मीन राशि में मंगल हो तो जातक गौवरवर्ण, कामुक, आज्ञाकारी गन्दा, अस्थिर जीवन, रोगी, प्रवासी, मान्त्रीक, बन्धु-द्वेषी, नास्तिक, हठी, धूर्त और वाचाल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थायी रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

### बुध

नवमभाव में बुध हो तो जातक विद्वान् लेखक, ज्योतिषी, धर्मभीरु, व्यवसाय प्रिय, भाग्यवान्, सम्पादक, गवैया, कवि एवं सदाचारी होता है।

मीन राशि में बुध हो तो जातक स्वाभिमानी, सदाचारी, सहनशील, भाग्यवान्, प्रवास में सुखी, मिष्टभाषी, कार्यदक्ष, धनसंही, नकल करने का स्वभाव, चिन्तित एवं छोटे दिल का होता है।

### गुरु

षष्ठभाव में गुरु हो तो जातक विवेकी, प्रसिद्ध, ज्योतिषी, विद्वान् सुकर्मरत, दुर्बल, उदार, प्रतापी, नीरोगी, लोकमान्य, बहुत कमशत्रु एवं मधुरभाषी होता है।

धनु राशि में गुरु हो तो जातक धनी, प्रभावशाली, विद्वान्, विश्वस्त, सज्जन, दानशील संगठनकर्ता, अच्छा वक्ता, धर्माचार्य, दम्भी, रतिप्रेमी एवं धूर्त होता है।

## शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी, वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

वृष राशि में शुक्र हो तो जातक सुन्दर, ऐश्वर्यवान्, दानी, सदाचारी, सात्त्विक, परोपकारी, अनेक शास्त्रज्ञ, दृढ़, स्वतन्त्रकामुक, शौकीन तबीयत, संगीत-नृत्य तथा अन्य कलाओं में रुचि एवं आलसी होता है।

## शनि

नवम भाव में शनि हो तो जातक धर्मात्मा, साहसी, प्रवासी, कृशदेही, भीरु, भ्रातृहीन, शत्रुनाशक रोगी वातरोगी, भ्रमणशील एवं वाचाल होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

## राहु

तृतीय भाव में राहु हो तो जातक योगाभ्यासी, विद्वान्, व्यवसायी, पराक्रमशून्य, दृढ़विवेकी, अरिष्टनाशक, प्रवासी, दीर्घायु एवं बलवान् होता है।

कन्या राशि में राहु हो तो जातक लोकप्रिय, मधुरभाषी, कविलेखक, गवैया एवं धनी होता है।

## केतु

नवम भाव में केतु हो तो जातक सुखाभिलाषी, व्यर्थपरिश्रमी अपयशी, दुःखी एवं 48 वर्ष के बाद भाग्योदय होता है।

मीन राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमी, धार्मिक प्रवृत्तिवाला, कर्णरोगी, प्रवासी, चंचल और कार्यपरायण होता है।

## दशा विश्लेषण

**महादशा :- चन्द्र  
( 15/03/2017 - 16/03/2027 )**

चन्द्र की महादशा की अवधि दस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह दशा 15/03/2017 को आरम्भ और 16/03/2027 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में चन्द्र द्वितीय भाव में अवस्थित है और द्वितीय भाव सम्पत्ति, लाभ, शक्ति और संसाधन, मूल्यवान वस्तुओं की प्राप्ति, बॉण्ड, शेयर, दायीं आँख, कल्पनाशक्ति, जीभ, दाँत तथा पारिवारिक सदस्यों का सूचक है। वर्षों की यह अवधि आपके लिए सुख और सम्पत्ति की दृष्टि से उत्तम होगी।

**स्वास्थ्य :**

चन्द्र कर्क में अवस्थित है जो उसका अपना भाव है। इसलिए इस अवधि में आपके स्वास्थ्य से सम्बन्धित कोई अनपेक्षित प्रतिकूल घटना नहीं घटेगी और न ही कोई समस्या अथवा दुर्घटना होगी। आप स्वयं को शक्तिशाली अनुभव करेंगे और अपने कार्यों को सुंदर ढंग से पूरा करने में समर्थ होंगे।

**अर्थ और सम्पत्ति :**

चन्द्र द्वितीय भाव में अवस्थित है जो धन और आर्थिक मामलों का भाव है। चन्द्र की इस स्थिति के कारण आपकी सम्पत्ति और बैंक बैलेंस में वृद्धि होगी। दस वर्षों की इस अवधि में आप बहुत अधिक धनोपार्जन करेंगे और अपने बैंक बैलेंस में वृद्धि करेंगे। इस दशा में धनोपार्जन और चल-अचल सम्पत्तियों में वृद्धि की संभावनाएं हैं जिससे आगे भी बहुमुखी वृद्धि होगी। स्त्री वर्ग से धन की प्राप्ति होगी। आपकी आर्थिक स्थिति परिवर्तनशील होगी।

**व्यवसाय :**

चन्द्र दशा की अवधि में आप अपनी स्थिति और कार्य से संतुष्ट होंगे।

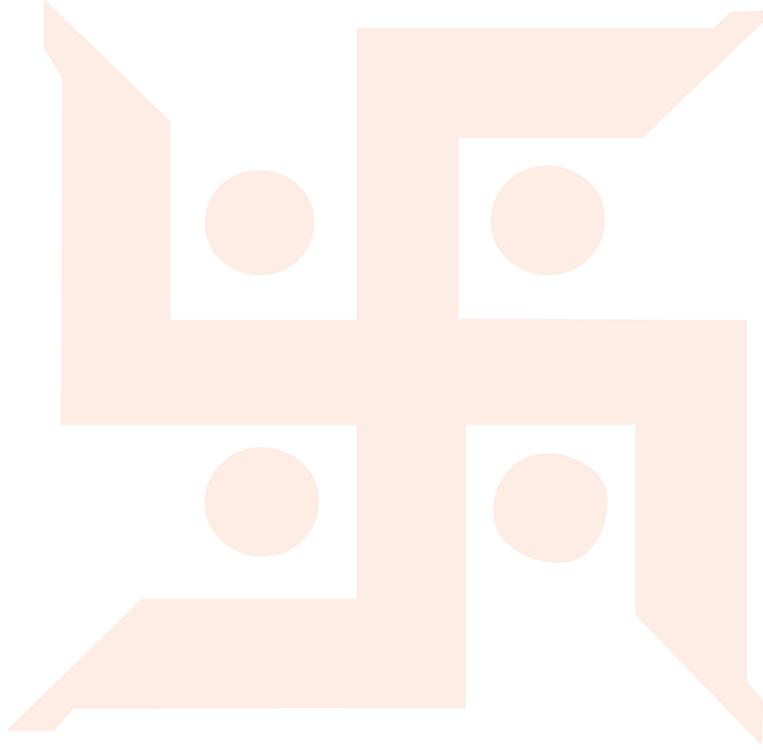
अगर आप सेवा में हैं तो आपकी उच्च पद पर पदोन्नति होगी और यदि व्यवसाय में हैं तो व्यवसाय के विस्तार व नये कार्य मिलने के संकेत हैं। नये रचनात्मक विचार आप के मस्तिष्क में उभरेंगे जिसकी आपके सहकर्मी और उच्चाधिकारी सराहना करेंगे और ऐसे कार्य जीवन में आगे बढ़ने में सहायक होंगे। वास्तव में चन्द्र आपके व्यवसाय में आपकी स्थिति सुदृढ़ करेगा।

**पारिवारिक जीवन :**

चंद्र के मस्तिष्क और माता का कारक होने के कारण आपको सुख, प्रतिष्ठा और उत्तम पारिवारिक जीवन की प्राप्ति होगी। खासकर आपकी माता आपके दैनिक जीवन में अत्यधिक सहायक होंगी। पिता भी आपकी सहायता करेंगे। बच्चे आज्ञाकारी होंगे और परिवार में वातावरण सामान्यतया सौहार्द्रपूर्ण रहेगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

आपको शिक्षा की प्रेरणा मिलेगी और पुराणों अथवा ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन में आपकी रुचि बढ़ेगी।



**अंतर्दशा :- चन्द्र - शुक्र  
( 13/01/2025 - 14/09/2026 )**

चंद्र की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 15/03/2017 को प्रारंभ होकर 16/03/2027 को समाप्त होगी।

इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 13/01/2025 को प्रारंभ होकर 14/09/2026 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्रिका के एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है।

इस अवधि में आपकी सैलानी प्रवृत्ति प्रबल रहेगी। इससे बहुत से मित्र बनेंगे और लोकप्रियता बढ़ेगी। विपरीत लिंग के व्यक्तियों से भी संबंध प्रगाढ़ होंगे। सुख-सुविधाएं भरपूर रहेंगी। धन का लाभ होगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें :

1. चींटियों को शक्कर और आटा दें।
2. कन्याओं को खीर खिलाएं।
3. भोजन से पहली चपाती निकालकर गाय को दें।
4. लक्ष्मीजी की उपासना करें।

**अंतर्दशा :- चन्द्र - सूर्य  
( 14/09/2026 - 16/03/2027 )**

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष होगी। आपके लिए यह 15/03/2017 को प्रारंभ होगी और 16/03/2027 को समाप्त होगी।

इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 6 मास होगी जो आपके लिए 14/09/2026 से प्रारंभ होकर 16/03/2027 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्रिका में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। सूर्य सबसे शक्तिशाली ज्योतिपुंज है।

इस अवधि में आपकी अध्यात्म और धर्म में प्रगति होगी। पुत्रों से लाभ होगा और स्वयं के प्रयास से जायदाद का निर्माण करेंगे। स्वास्थ्य उत्तम होगा। पैतृक संपत्ति प्राप्त हो सकती है। आपकी महत्वाकांक्षा प्रबल होगी जिससे उद्यमशीलता में वृद्धि होगी। सूर्य पिता और आत्मा का कारक होता है। आप पिता और गुरु के भक्त रहेंगे।

**महादशा :- मंगल**  
**( 16/03/2027 - 15/03/2034 )**

मंगल की महादशा 16/03/2027 को आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 15/03/2034 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल नवम भाव में स्थित है। मंगल की तृतीय, चतुर्थ और वारहवें भाव पर दृष्टि है। मंगल इस दशा के दौरान अच्छा फल देगा। इसके पूर्व आपकी दस वर्ष की चन्द्र दशा चल रही थी। आपकी यात्रा, कुछ व्यय, आध्यत्मिक उन्नति और सम्भवतः सफलता में कुछ बाधा हुई होगी। इस दशा के दौरान आपको सम्पत्ति, समृद्धि और परिवार से सुख की प्राप्ति तथा यात्रा होगी।

**स्वास्थ्य :**

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपमें रोगों और कष्टों से लड़ने की शक्ति होगी। आपमें भरपूर-आत्मविश्वास तथा जीवनी-शक्ति होगी। मौसम में परिवर्तन के कारण आप सरदर्द, संक्रामक बीमारी तथा ज्वर से पीड़ित हो सकते हैं। इन मामूली बीमारियों को छोड़ इस दशा में आपका स्वास्थ्य सामान्यतया उत्तम रहेगा।

**अर्थ और व्यवसाय :**

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति सृष्ट होगी। नवम भाव में स्थित होने के कारण मंगल आपको सम्पत्ति, समृद्धि, और सौभाग्य देगा तथा आपको पिता से लाभ मिलेगा। आपको सम्पत्ति, माता से लाभ मिल सकते हैं। किसी शुभ उद्देश्य के लिए व्यय भी हो सकता है। आपको सट्टे तथा निवेश से लाभ हो सकता है। जीविका के लिए सैन्य सेवा, इन्जीनियरिंग, सर्जरी, दवा के क्षेत्र लोहा-इस्पात से सम्बद्ध व्यवसाय या पुलिस के कार्य का चयन कर सकते हैं। आपके लिए योजना तथा प्रशासन से सम्बद्ध व्यवसाय लाभदायक हो सकते हैं। तकनीकी कार्य आपके लिये उपयुक्त होगा। आप एक सफल सर्जन हो सकते हैं। नौकरीपेशा लोगों को यश, ख्याति, शक्ति और अधिकार की प्राप्ति होगी और आपकी आय में वृद्धि तथा उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों का व्यय हो सकता है। आपको साझेदारी में सावधानी बरतनी चाहिए। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों का विदेश से व्यापार हो सकता है।

**वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :**

मंगल की महादशा के दौरान आपको वाहन-सुख मिलेगा। शुक्र की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्राएं होंगी। इस दशा के दौरान आपको जमीन-जायदाद की प्राप्ति होगी। मंगल की अन्तर्दशा में खास तौर से सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

**शिक्षा :**

इस दशा के दौरान आपकी तकनीकी शिक्षा उत्तम होगी। उच्च शिक्षा में आप सफल होंगे और इस दशा में बहुत अच्छा करेंगे। गणित, विधि, इन्जीनियरिंग, विज्ञान तथा तकनीकी

के विषय आपके लिए बहुत उपयुक्त होंगे। आपमें आत्मविश्वास होगा और आप कार्य कुशलता से अपना लक्ष्य प्राप्त करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर होगा। आपको आपके बच्चों से सुख मिलेगा। आपके जीवनसाथी के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके जीवनसाथी को सम्बन्धियों से लाभ मिलेगा और अपने ही प्रयासों से धनोपार्जन करेंगे। आपकी माता का आप पर बहुत प्रभाव होगा। आपको उनसे लाभ मिलेगा। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम होगा और सम्पत्ति, सफलता, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को साझेदारी के व्यवसाय में धन की प्राप्ति होगी। आपके बड़े भाई-बहनों को लाभ का अवसर मिलेगा, उनके प्रभावशाली मित्र होंगे और उनकी मनोकामनाओं की पूर्ति होगी।

अन्तर्दशा :

मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा और आपको सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आगे राहु की अन्तर्दशा में कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं होगी। गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको सफल निवेश तथा सट्टे और कुछ परिवर्तन से लाभ होगा। शनि की अन्तर्दशा के कारण आपको कुछ स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं हो सकती हैं। बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको हर प्रकार का लाभ होगा। आगे केतु की अन्तर्दशा में कुछ मानसिक तथा शारीरिक समस्याएं हो सकती हैं। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपकी यात्रा और जीवन वृत्ति में उन्नति हो सकती है। सूर्य की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको यश, ख्याति, शक्ति, उत्तम स्वास्थ्य तथा सुख की प्राप्ति होगी जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में आपकी लम्बी यात्रा, व्यय तथा आध्यात्मिक उन्नति होगी।

**अंतर्दशा :- मंगल - मंगल  
( 16/03/2027 - 12/08/2027 )**

आपके लिए मंगल की महादशा 16/03/2027 को प्रारंभ हुई है। इस महादशा के अंतर्गत प्रथम अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 16/03/2027 को प्रारंभ होकर 12/08/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल वीरता, साहस, अचल संपत्ति और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आपकी बहुत सी यात्राएं हो सकती हैं। सब सुख-सुविधाएं, धन उपलब्ध रहेंगे। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र से संबद्ध हो सकते हैं, बहुत से लोगों का भला करेंगे। विदेश यात्रा हो सकती है। आप साहसी होंगे। घरेलू सुख में मामूली कमी आ सकती है। अचल संपत्ति प्राप्त करेंगे। खर्च बढ़ सकते हैं। कुछ अवांछित परिवर्तन हो सकते हैं।

आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, उनके अपने भाइयों से संबंध मधुर रहेंगे। आपके पिता सम्मानित होंगे, सुखी रहेंगे और धन प्राप्त करेंगे। माता में विरोधियों को परास्त करने की शक्ति मौजूद रहेगी। भाई-बहनों को साझेदारी से लाभ होगा। उनका कारोबार चमकेगा।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम रहेगी। अगर वे सेवारत हैं तो निवेश से लाभ प्राप्त करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो स्थिति मजबूत होगी। परामर्शदाताओं और व्यापारियों को कुछ नुकसान हो सकता है या अवांछित परिवर्तन हो सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, पैरों में मामूली चोट लग सकती है। यात्रा के समय सावधानी आवश्यक है। अरिष्ट से बचाव के लिए हनुमान चालीसा का पाठ करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - राहु  
( 12/08/2027 - 29/08/2028 )**

आपके लिए मंगल की महादशा 16/03/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी। आपके लिए यह 12/08/2027 को प्रारंभ होकर 29/08/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक लाभ, परिवर्तन और लंबी यात्राओं का कारक है।

इस अवधि में आप लक्ष्य प्राप्त करने के लिए उत्साह से परिपूर्ण और दृढ़प्रतिज्ञ होंगे। कार्यों में सफलता मिलेगी। शत्रु और स्पर्धी परास्त होंगे। आप उद्यमी, भाग्यवान और धनी होंगे। लाभकारी लघु यात्राएं हो सकती हैं। आप साहसी होंगे और विरोधियों की परवाह नहीं करेंगे। परिवार में कोई विवाह हो सकता है।

आपके जीवनसाथी सौभाग्यशाली रहेंगे। आपके पिता व्यापारिक अनुबंधों में सफल रहेंगे, यात्राएं होंगी, मुकदमे में सफलता मिलेगी, सम्मान बढ़ेगा। आपकी माता को स्वास्थ्य की

मामूली समस्या हो सकती है। आपके भाई-बहन धनी बनेंगे, सम्मान में वृद्धि होगी।

आपकी संतान को किसी से अप्रत्याशित सहायता मिल सकती है। अगर वे कार्यरत हैं तो व्यापार में धन कमाएंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की सक्रियता और लाभ में वृद्धि होगी। व्यापारी धनी बनेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। गले की छोटी-मोटी शिकायत हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए हनुमानजी की पूजा करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - गुरु  
( 29/08/2028 - 05/08/2029 )**

आपकी मंगल की महादशा 16/03/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 29/08/2028 को प्रारंभ होकर 05/08/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति विवेक, संतान और आध्यात्मिकता का कारक है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शत्रुओं से मुक्ति मिलेगी। कर्ज खत्म होगा। रोजगार के मौके मिलेंगे। कार्यालय उत्तम होगा। चुनाव में सफल हो सकते हैं। मुकदमे में जीत होगी। ज्ञानार्जन में रुचि होगी, अध्यात्म में समय बिताएंगे। जनता से सम्मान मिलेगा। प्रोन्नति हो सकती है। वेतन बढ़ सकता है।

आपके जीवन साथी को शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आपके पिता कार्यक्षेत्र में तरक्की करेंगे। माता की यात्राएं होंगी, जीवनस्तर ऊंचा होगा, मित्र और धन नसीब होंगे। आपके भाई-बहन अचल संपत्ति क्रय करेंगे, घरेलू सुख रहेगा, मित्र मदद करेंगे।

आपकी संतान शिक्षा में प्रगति करेगी; वे घर में सुखी रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चपद प्राप्त करेंगे, कार्यों में सफलता मिलेगी। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों के खर्चे बढ़ सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली व्याधि हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए ब्रह्माजी की उपासना करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - शनि  
( 05/08/2029 - 14/09/2030 )**

आपके लिए मंगल की महादशा 16/03/2027 को आरंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन रहेगी। आपके लिए यह 05/08/2029 को प्रारंभ होकर 14/09/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, सेवा और पश्चिम दिशा का कारक है।

इस अवधि में आपको पुत्रों से धन और खुशी की प्राप्ति होगी। आपका मन अध्यात्म और दान-धर्म में लगेगा। ज्योतिष का अध्ययन कर सकते हैं। धन, सम्मान, और सफलता का संकेत है। आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। आय में वृद्धि होगी। आपकी कार्यक्षमता की तारीफ होगी। शत्रुओं पर विजय होगी। ठेकेदारी, नौकरी आदि से लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी उत्साही रहेंगे। आपके पिता के कार्य पूर्ण होंगे। माता को शत्रुओं पर विजय मिलेगी। भाई-बहनों की साख में वृद्धि होगी, विवाह हो सकता है, यात्रा और अनुबंधों का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे सेवारत हैं तो तबादला हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो प्रोन्नति होगी। व्यापारी खूब धन कमाएंगे। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं।

वातजन्य रोग, गठिया आदि से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए भैरवजी के रूप में शिवजी की आराधना करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - बुध  
( 14/09/2030 - 11/09/2031 )**

आपके लिए मंगल की महादशा 16/03/2027 को प्रारंभ हुई थी। इसमें पांचवी अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 14/09/2030 को प्रारंभ होकर 11/09/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, शिक्षा और सम्मान का कारक है।

इस अवधि में आपकी लंबी यात्रा हो सकती है। प्रकाशन कार्य के लिए समय शुभ है। पत्रलेखन से लाभ होगा। उच्च शिक्षा के अवसर मिलेंगे। बहुत से मित्र होंगे। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में दिलचस्पी बढ़ेगी। शिक्षा, विज्ञान या धर्म से संबंधित यात्रा हो सकती है। भाई-बहनों से संबंध उत्तम रहेंगे। धन कमा सकते हैं। जनसंपर्क से लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी विचारों की उत्तम प्रस्तुति द्वारा या कमीशन कार्य से धन कमा सकते हैं। आपके पिता समृद्ध और प्रसन्न होंगे। माता समाजकार्य में रुचि लेंगी। भाई-बहनों को भागीदारी, व्यापार, विवाह से लाभ हो सकता है। उनके प्रभावशाली मित्र होंगे, आकांक्षाएं पूर्ण होंगी।

आपकी संतान को उच्चशिक्षा में सफलता मिलेगी, भाग्य उत्तम रहेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो साख में वृद्धि होगी, कार्य में प्रगति करेंगे। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे, यात्राएं होंगी। व्यापारियों को यात्रा और व्यापार से लाभ होगा।

स्नायविक थकान और पैरों की व्याधि से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए मूंग की दाल दान में दें।